भारतीय विदेश नीति में निरंतरता और बदलाव : पीएम मोदी की विदेश नीति के विशेष संदर्भ में

***सुरेश व्यास**

सारांश

1990 के बाद बदलते अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भारत ने भी अपनी विदेश नीति में बदलाव किया है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व में द्विध्रुवीय व्यवस्था कायम हो गई है। भूमंडलीकरण के चलते अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में विचारधारा का समापन होने के कगार पर है और प्रत्येक राष्ट्र आर्थिक हित को प्रधानता देने में लगा है। यह समय भारतीय विदेश नीति के लिए महान और अभूतपूर्व चुनौतियों एवं अवसरों का समय है। यदि हमें त्वरित विकास एवं सामरिक स्वायत्ता को कायम रखते हुए भारत में घरेलू बदलाव लाना है तो हमारे सामरिक लक्ष्य वही बने रहने चाहिए। इन लक्ष्यों में लंबे समय तक परिवर्तन नहीं होगा क्योंकि इन्हें प्राप्त करने के लिए हमें समय की आवश्यकता तो पड़ेगी। परन्तु वर्तमान आर्थिक परिवेश में इन्हें प्राप्त करना हमारे कौशल और हमारे देश के लिए एक वास्तविक चुनौती होगी। वर्तमान संकट के दौर में भारत के लिए प्रौद्योगिकियों और संसाधनों को प्राप्त करने का अवसर है। इसी प्रकार वर्तमान संकट हमें सत्ता के अन्तर्राष्ट्रीय संतुलन में अपनी सापेक्षिक स्थिति में सुधार लाने का भी अवसर प्रदान करता है। यह आलेख भारतीय विदेश नीति की निरंतरता की व्याख्या करते हुए उसमें आये बदलावों की चर्चा पीएम मोदी की विदेश नीति के विशेष संदर्भ में करने का प्रयास करता है।

विशिष्ट शब्द : विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, भूमंडलीकरण, मोदी डॉक्ट्रिन।

*****प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान), राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोगला, पं. स. झाड़ोल, जिला उदयपुर (राज.)

परिचयः

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति मुख्य रूप से कुछ सिद्धांतों, हितों एवं महत्वपूर्ण उद्देश्यों का समूह होता है जिनके माध्यम से एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ संबंध स्थापित करके उन सिद्धांतों और उद्देश्यों की पूर्ति करने हेतु अग्रसर रहता है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी विदेश नीति होती है जिसके माध्यम से वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के साथ अपने संबंधों को आगे बढ़ाता है। जॉर्ज मॉडलस्की के अनुसार ''विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को बलदने और अपनी गतिविधियों को अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में ढालने की कोशिश करता है।'' फेलिक्स ग्रास ने यहां तक कहा है कि ''कई बार किसी राष्ट्र के साथ संबंध न होना या उस राष्ट्र के बारे में कोई निश्चित नीति न होना भी विदेश नीति है।'' लर्चे एवं सैद ने विदेश नीति के तीन प्रमुख पहलुओं की चर्चा की हैः

1. विदेश नीति उन सामान्य सिद्धांतों का समूह होती है जिसके द्वारा राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय वातावरण से सम्बद्ध अपनी प्रतिक्रियाओं को निर्धरित करता हैं
2. विदेश नीति के अंतर्गत 'निर्णय' और 'कार्यवाही' दोनों ही गहरे रूप से जुड़े होते है।
3. विदेश नीति में सामान्यतः संसाधनों के प्रति वचनबद्धता तथा जोखिम की मान्यता का समावेश होता है। अर्थात् विदेश नीति उन सिद्धांतों, हितों एवं उद्देश्यों के प्रति वचनबद्धता है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में अपने संबंधों का निर्वाह करता है।

किसी भी देश की विदेश नीति उन सिद्धांतों, हितों एवं उद्देश्यों के प्रति वचनबद्धता है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में अपने संबंधों का निर्वाह करता है। किसी भी देश की विदेश नीति के उद्देश्यों को राष्ट्रीय हित के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है जिसके तीन मुख्य तत्व है – सुरक्षा, राष्ट्रीय, विकास और विश्व व्यवस्था। लर्चे व सैद ने विदेश नीति के छह सामान्य उद्देश्य बताये है – आत्मरक्षण, सुरक्षा, कल्याण, प्रतिष्ठा, विचारधारा एवं शक्ति।

लार्ड पामर्स्टन के अनुसार, ''हमारे कोई शाश्वत मित्र नहीं है और न ही हमारे कोई सदा बने रहने वाला शत्रु। केवल हमारे हित ही शाश्वत हैं और उन हितों का अनुसरण संवर्धन हमारा कर्तव्य हैं। राष्ट्रीय हित प्रत्येक देश के आर्थिक भौगोलिक तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों द्वारा निर्मित होता है जिसमें प्रत्येक देश के आर्थिक तथा सैनिक तत्व उसकी परंपराएं, विचार,

रीति–रिवाज, धार्मिक, सामाजिक, व्यवहार और विश्वास इसके निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

रॉबर्ट ऑस्वुड ने राष्ट्रीय हित को उन मामलों का समूह बताया है जो केवल राष्ट्र के लाभ के लिए हो। पामर और पर्किन्स ने राष्ट्रीय हित की अभिवृद्धि के विभिन्न साधन बताये हैं जिनमें प्रमुख रूप से कूटनीति, प्रचार एवं राजनीतिक युद्ध, आर्थिक साधन, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद एवं युद्ध हैं। इन साधनों के द्वारा कोई भी राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि कर सकता है। किसी भी देश की विदेश नीति अपने आंतरिक एवं बाह्य वातावरण के द्वारा काफी हद तक प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त इतिहास, विरासत, व्यक्तित्व, विचारधाराएं विभिन्न संरचनाओं का प्रभाव भी इस पर दृष्टिगोचर होता है। अर्थात् किसी भी देश की विदेश नीति उसके इतिहास से गहरा सम्बन्ध रखती हैं। भारत भी इस स्थिति का अपवाद नहीं है।

भारत की विदेश नीति भी इसके इतिहास और स्वतंत्रता आंदोलन के साथ गहरे रूप में जुड़ी हुई है।ऐतिहासिक विरासत के रूप में भारत की विदेश नीति आज उन अनेक तथ्यों को समेटे हुए है जो कभी इसके स्वतंत्रता संघर्ष से उपजे थे। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व एवं विश्व शांति के विचार भारतीय विदेश नीति के सैद्धांतिक आधार हैं जिसे महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी जैसे विचारकों ने प्रस्तुत किया था। इसी प्रकार उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद एवं रंगभेद की नीति का विरोध भी भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की उपज है। वर्तमान में भारत के विश्व के अधिकतर देशों के साथ गहरे राजनयिक सम्बन्ध हैं। जनसंख्या की दृष्टि से भारत संसार का दूसरा सबसे बड़ा देश होने के साथ–साथ विश्व की उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्रात्मक व्यवस्था वाला देश है।

जे. बंदोपाध्याय ने भारतीय विदेश नीति के तीन प्रमुख उद्देश्य बताये हैं – राष्ट्रीय सुरक्षा, विकास तथा विश्व व्यवस्था। अप्पादोराय और राजन के भारतीय विदेश नीति के निम्न उद्देश्यों का उल्लेख किया है – क्षैत्रीय अखंडता व स्वतंत्र नीति, अंतर्राष्ट्रीय शांति, आर्थिक विकास, पराधीन राष्ट्रों की स्वतंत्रता, रंगभेद का विरोध, भारतीय मूल के लोगों के हितों की रक्षा शामिल है।

भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत गत्यात्मक होने के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने की क्षमता रखते हैं। उदाहरण स्वरूप भारत ने शीत युद्ध काल के

दौरान गुटनिरपेक्षता की नीति का समर्थन किया और 1990 के बाद शीत युद्ध की समाप्ति एवं सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् नये अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के अनुरूप अपनी विदेश नीति में बदलाव किया जिससे बदलती अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अपने को ढाल सके और अपने राष्ट्रीय हितों को प्रभावी तरीके से संरक्षण कर सके।

भारत की विदेश नीति का सही आंकलन करने हेतु उसके विश्लेषण के साथ–साथ उसकी नीति निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन भी अनिवार्य है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है – 1. संसद 2. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिमंडल 3. राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् 4. विदेश मंत्रालय 5. गुप्तचर संस्थाएँ।इनके अतिरिक्त भारतीय विदेश नीति के निर्माण में मीडिया संस्थाओं की भी प्रमुख भूमिका रही है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विदेश नीति में जिन विचारों को अपनाया गया था उनमें समय–समय पर परिवर्तन होता रहा है। शीत युद्ध की स्थिति, सोवियत संघ का पतन, शीत युद्ध का अन्त, अमेरिका का इराक पर हमला, आतंकवादी घटनाएँ विशेषकर अमेरिका तथा भारत में और विश्व पर अमेरिकी दादागिरी तथा युरोपियन युनियन का बनना, अफ्रीकी संघ का निर्माण, सार्क, जैसे क्षेत्रीय संगठनों का निर्माण आदि घटनाओं ने भारत की विदेश नीति को बदलते संबंधों के आधार पर पुर्नविचार करने के लिए एक नई दिशा प्रदान की।

1990 के बाद बदलते अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भारत ने भी अपनी विदेश नीति में बदलाव किया है । शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व में एक ध्रुवीय व्यवस्था कायम हो गई है । वैश्वीकरण के चलते अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में विचारधारा का समापन होने के कगार पर है और प्रत्येक राष्ट्र आर्थिक हित को प्रधानता देने में लगा है। ऐसे परिवर्तित परिवेश में भारतीय विदेश नीति के प्रमुख लक्ष्य क्या होने चाहिए तथा इन लक्ष्यों की पूर्ति वर्तमान समसामयिक विश्व में कहीं तक पूरी की जा सकती है।

विद्वानों का मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बदलते परिदृश्य के कारण भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी वैदेशिक नीति को नया रूप प्रदान करने की होगी। भारत को परम्परागत हितों, राष्ट्रीय हितों एवं सुरक्षा, एकता एवं अखंडता को बरकरार रखना, तीव्र गति से आर्थिक विकास, एवं इस बात को निश्चित करना होगा कि वैदेशिक नीतियों के निर्धारण में भारत बाहरी प्रभावों से मुक्त रह सके। आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत अपने

वैदेशिक संबंधों को फिर से नये रूप में प्रस्तुत करे। आज अमेरिका पाकिस्तान के बजाय भारत के साथ अधिक मित्रता की नीति अपना रहा है। भारत को सोच–समझकर अमेरिका के साथ आर्थिक विकास की नीति अपनानी होगी। इसी प्रकार पाकिस्तान से आतंकवाद का मुद्दा, तथा कश्मीर का मुद्दा द्विपक्षीय बातचीत के आधार पर हल करने के प्रयास ढूँढने होंगे। साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ के पुर्नगठन और सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के दावे को विश्व के विकासशील देशों के सामने सुदृढ़ तरीके में प्रस्तुत करना होगा ताकि वो भारत को इस सम्मान को दिलाने में सहायता करे। इसके अलावा पड़ोसियों के साथ भी भारत को आर्थिक तथा सुरक्षात्मक तनाव पर अधिक ध्यान देने की नीति अपनानी होगी।

मई 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्तासीन होने के बाद से विदेश नीति में विस्तार की शैली, तरीकों तथा घटकों में नाटकीय परिवर्तन हुआ है। विदेश नीति के मोर्चे पर मोदी सरकार ने चुनाव जीतने के बाद ही काम करना शुरू कर दिया है। मोदी ने पहली विदेश यात्रा के लिए मालदीव और श्रीलंका को चुनकर ये साबित कर दिया है कि वो अपनी 'नेबरहुड–फ़र्स्ट पॉलिसी' यानी पड़ोसी देशों को विदेश नीति में तरजीह देने की नीति के प्रति समर्पित हैं। ख़ास बात ये है कि मोदी उस समय इस नीति के प्रति अपने समर्पण को दर्शा रहे हैं जब चीन ने दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में अपने दख़ल को गंभीर रूप से बढ़ाया है। मोदी की यात्रा के दौरान, मालदीव के राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सालेह ने भी अपने प्रशासन की ओर से 'इंडिया–फ़र्स्ट पॉलिसी' यानी भारत को प्रमुखता देने की नीति पर ज़ोर देकर भारत और मालदीव के संबंधों को ऐतिहासिक करार दिया. मालदीव की पिछली सरकार में दोनों देशों के संबंध काफ़ी तनावपूर्ण हो गए थे।

स्पष्ट है कि विश्व के बदलते राजनीतिक परिवेश में भारत को समायोजन की नीति का पालन करना उचित होगा इसके द्वारा भारत न केवल अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रख सकता है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के मंच पर एक नायक की भूमिका भी निभा सकता है।

विदेश मामलों के जानकार नरेंद्र तनेजा ने कहा भारत की शीत युद्ध के दौरान और शीत युद्ध के बाद की विदेश नीति में गहरा अंतर है। दोनों ही विदेश नीतियों के अलग होने का सबसे बड़ा कारण वैश्विक स्थिति में परिवर्तन है। आज का भारत और आज का विश्व अलग है। उस समय नेहरू की विदेश नीति जो थी उसमें नॉन एलाइंमेंट का ज्यादा बोलबाला था

और सोवियत संघ और अमेरिका में कुल मिलाकर एक शीत युद्ध चल रहा था। उस वक्त दुनिया दो अलग खेमों में बंटी हुई थी। ज्यादातर देश विकासशील थे लेकिन आज का जो विश्व है। उसमें चुनौतियां बहुत ज्यादा है। आज के समय में चीन बहुत बड़ी शक्ति के रूप में उभर के आया है और उसका नजरिया भारत को लेकर आक्रामक है। वहीं दूसरी तरफ अमेरिका अब उतना ताकतवर नहीं है जितना पहले होता था। आज की जो दुनिया है उसमें भारत के लिए जो चुनौतियां हैं वो इतिहास में कभी नहीं रही. इसलिए आज के जरूरत और चुनौतियों के हिसाब से जैसी विदेश नीति होनी चाहिए। पीएम मोदी की विदेश नीति बिल्कुल वैसी ही है। हमारी विदेश नीति में लचीलापन भी है और दूरदर्शिता भी है।

वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शासन काल के आठ वर्ष पूरे हो गए है इन वर्षों में भारत की विदेश नीति में अनेक बदलाव देखें गए हैं। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि मोदी का कार्यकाल अपनी विशेष विदेश नीति के लिए भी जाना जाता है। प्रधानमंत्री मोदी का बतौर पीएम प्रथम कार्यकाल हो या दूसरा कार्यकाल विशेषज्ञों ने माना है कि मोदी के नेतृत्व में पिछले आठ वर्षों में भारत की विदेश नीति बहुआयामी रही है। विश्व के बारे में मोदी सरकार की सोच पुरानी नीतियों से मुक्त है। इसमें विदेश मामलों में व्यवहारिक रणनीति पर ज्यादा जोर दिया गया है।

मोदी के प्रथम कार्यकाल में पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान में एयर स्ट्राइक का मामला हो या जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटाने का मसला भारत ने अपने कूटनीतिक कौशल का परिचय अपनी विदेश नीति में दिया है। इन दोनों मसलों पर पाकिस्तान पूरी तरह से अलग–थलग हो गया है। इस दौरान मोदी सरकार ने रूस और अमेरिका दोनों विरोधी देशों के साथ अपनी रिश्तों में निकटता बनाए रखी और इन दोनों देशों के साथ अच्छे संबंध कायम किए। यह मोदी की विदेश नीति की एक बड़ी सफलता है। रूस के साथ एस–400 डिफेंस मिसाइल सिस्टम खरीद मामले में भारत ने यह सिद्ध कर दिया कि वह अपने सामरिक संबंधों के संचालन के मामलों में स्वतंत्र है। यही कारण है कि भारत ने अमेरिकी दबाव से मुक्त होकर इस मिसाइल को अपनी रक्षा उपकरणों में शामिल किया। अमेरिका के तमाम विरोध के बावजूद भारत ने इस रक्षा सौदे में यह सिद्ध कर दिया कि वह अपने रक्षा सौदों के मामले में किसी के दबाव में नहीं आएगा।

रूस और यूक्रेन के आपसी मामले में भी भारत की तटस्थता नीति का अमेरिका व पश्चिमी देशों ने जमकर विरोध किया। अमेरिका ने कहा कि भारत की तटस्थता नीति और अमेरिकी प्रतिबंधों के प्रतिकूल है। इन सबके बावजूद रूस–यूक्रेन जंग में भारत ने अपनी तटस्थता नीति को जारी रखा और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अमरीकी दबाव के आगे न झुकते हुए उसने रूस के खिलाफ मतदान में हिस्सा नहीं लेकर अपने अपनी पूर्व स्थिति को और मजबूत किया। इस बारे में भारत ने कहा कि वह विदेश नीति के मामले में स्वतंत्र आचरण करेगा और किसी भी देश के दबाव में न आकर अपने राष्ट्रीय हितों के अनुकूल फैसला लेगा। इससे स्पष्ट होता है कि इन विकट परिस्थितियों में भी भारत ने स्वतंत्र विदेश नीति अपनायी।

खाड़ी देशों संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, सऊदी अरब, बहरीन, ओमान और कतर के साथ भी भारत के द्विपक्षीय संबंध आर्थिक दृष्टि से काफी मजबूत रहे हैं। खाड़ी सहयोग संगठन भारत के सबसे बड़े क्षेत्रीय व्यापार साझेदार में से है। भारत ने संयुक्त अरब अमीरात के साथ मुक्त व्यापार समझौता किया है और 50 अरब डालर के द्विपक्षीय व्यापार के लिए हस्ताक्षर किए हैं जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ने की संभावना है। इसके अलावा, भारत की सबसे ज्यादा कामकाजी आबादी भी इन खाड़ी देशों में रहती है जो हर साल भारत को 70 से 80 अरब डॉलर की राशि भेजती है जो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए काफी अहम है।

वहीं इजराइल और फिलिस्तीन समस्या की बात करें तो मोदी सरकार के सत्ता में आने से पहले तक भारत की विदेश नीति फिलीस्तीन के प्रति झुकाव वाली रही है। भारत फिलीस्तीन के साथ मानवाधिकार और उसकी आजादी के मुद्दे पर खड़ा रहा है। भारत हमेशा से फिलीस्तीन के लिए एक अलग राष्ट्र और पूर्वी यरुशलम को उसकी राजधानी बनाए जाने का पक्षधर रहा है। लेकिन 2021 में जब दोनों देश एक दूसरे के आमने–सामने थे, तब भारत ने पहली बार इजरायल और फिलीस्तीन के बीच मसले को सुलझाने के लिए दो राष्ट्र समाधान का जिक्र नहीं किया। ऐसा पहली बार हुआ है। जब इजरायल–फिलीस्तीन संकट को लेकर भारत ने अपने नीतिगत बयान को बदला है। इससे पहले सुरक्षा परिषद में भारत ने कहा था, हम दोनों पक्षों से ज्यादा से ज्यादा संयम बरतने की अपील करते हैं और तनाव बढ़ाने वाले कदमों से बचने और यरुशलम और आसपास की जगहों पर यथास्थिति में

एकतरफा बदलाव से बचने की अपील करते हैं। कभी फिलिस्तीन को खुलकर अपना सपोर्ट करने वाले देश भारत के इस बयान से लग रहा था कि भारत ने दोनों पक्षों को लेकर संतुलित बयान दिया है। विदेशी मामलों के जानकार नरेंद्र तनेजा का कहना है, भारत की इजरायल और फिलीस्तीन को लेकर नीति में राष्ट्रहित नहीं, बल्कि भारत के मुस्लिमों को खुश करने के लिए थी, जो एक तरह से फिलीस्तीन को लेकर एकतरफा थी। लेकिन भारत अब खुलकर इजरायल के साथ अपने संबंध मजूबत कर रहा है। इस प्रकार इस मुद्दे पर भी भारतीय विदेश नीति में परिवर्तन आया है।इस प्रकार भारत की विदेश नीति में पीएम मोदी के शासनकाल में अनेक परिवर्तन और बदलाव हुए हैं।

मोदी की विदेश नीति के समक्ष चुनौतियांः

उपरोक्त सफलताओं के बावजूद मोदी सरकार की विदेश नीति के समक्ष कई चुनौतियां हैं जिन्हें पार करना अति–आवश्यक है। यह बात तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जब सरकार को संस्थागत और विचारों के स्तर पर कई समस्याओं को हल करना है। वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में जिस तेजी से बदलाव हो रहे हैं, उसमें इन चुनौतियों का हल खोजना और भी मुश्किल होगा। भारत को कई देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाने में उसकी राजनयिक क्षमताओं की अग्नि परीक्षा होगी।

इसके साथ ही भारत को अपनी बढ़ती वैश्विक ताकत को भी बनाए रखना जरुरी होगा ताकि एक बड़ी शक्ति के उसके दावे की विश्वसनीयता कायम रहे। हालांकि भारत अब ज्यादा वैश्विक जिम्मेदारी निभाने को तैयार है जिसकी शुरुआत उसे अपने पड़ौसियों से करनी होगी और उनके साथ अपने संबंध सुधरने होंगे। तभी उसकी वैश्विक स्तर पर मान्यता कायम हो सकेगी। इसके साथ ही भारत को अपनी संस्थागत कमजोरियों को पहचान कर उन्हें दूर करना भी आवश्यक है ताकि उसे अपनी विदेश नीति के स्तर पर अधिक सफलता मिल सके।

प्रधानमंत्री मोदी के शासन में विश्व के परमाणु शक्ति संपन्न देशों के साथ भारत के संबंध मजबूत और प्रगाढ़ हुए हैं। वर्ष 2014 से वर्ष 2022 के बीच इन देशों के साथ अनेक उतार–चढ़ावों के बावजूद भारत के अच्छे संबंध रहे हैं। हालांकि, चीन ने अकेले ही एनएसजी में भारत के प्रवेश पर रोक लगा रखी है। असैन्य परमाणु सहयोग के क्षेत्र में भारत ने कुछ

नए करार किए हैं जिसमें ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस और ब्रिटेन शामिल है। परमाणु शक्ति संपन्न देशों के साथ निकटता बढ़ाने के लिए भारत ने आवश्यक राजनीतिक समर्थन भी जुटाया है, लेकिन भारत के समक्ष एनएसजी में प्रवेश पाना अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

इस सदी में भारत के समक्ष प्रमुख रूप से चीन और पाकिस्तान संबंधी चुनौती बरकरार रहेगी। इसके साथ ही श्रीलंका, मालदीव, अफगानिस्तान की राजनीतिक स्थिति भी भारतीय विदेश नीति के लिए एक चुनौती बनी रहेगी। वर्तमान सदी एशिया की सदी है। मोदी सरकार के समक्ष हिंद–प्रशांत की स्थिति के बीच तालमेल बनाना सरकार के लिए सबसे मुश्किल चुनौती होगी क्योंकि चीन और अन्य विकसित देश इस क्षेत्र में लगातार अपना प्रभाव बढ़ा रहे हैं। इसके लिए भारत को अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ रणनीतिक सहयोग बढ़ाना आवश्यक है ताकि इस क्षेत्र में संतुलन बना रहे हिंद–प्रशांत क्षेत्र में रूस अपनी नाराजगी भी जाहिर कर चुका है। भारत–रूस के बीच कई मुद्दों पर सहमति के बावजूद यह मसला आने वाले वर्षों में भारत–रूस की साझेदारी की राह में बाधा बन सकता है। बदलती हुई क्षेत्रीय और वैश्विक व्यवस्था में भारत और रूस दोनों ही अपनी–अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश करेंगे।

निष्कर्ष:

वर्तमान में भारतीय विदेश में पूर्व की परंपरागत विदेश नीति की अपेक्षा काफी बदलाव और परिवर्तन आए हैं। पहले भारत ने शीत युद्ध के दौरान गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुपालन किया ताकि दोनों गुटों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करके उनसे सहयोग प्राप्त कर सके। परन्तु 1990 के बाद भारत की विदेश नीति में काफी परिवर्तन आया और इसने उदारीकरण और पश्चिम के प्रति झुकाव पर बल दिया जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक व्यवस्था के साथ जुड़ सकी। मोदी के पीएम बनने के बाद भारत ने पड़ौसी देशों के साथ संबंध सुधारने के साथ–साथ काफी तीव्र गति से वैश्विक मामलों में रूचि लेना प्रारंभ किया और अपनी विदेश नीति को नया आकार दिया जिससे भारत विश्व में एक महाशक्ति में रूप में उभरकर सामने आया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Ganguly, Sumit. *Engaging the World: India's Foreign Policy since 1947*. New Delhi: Oxford University Press, 2015.
2. Ganguly, Sumit. *Indian Foreign Policy*, New Delhi: Oxford University Press, 2015.
3. Pant, Harsh V., ed. *New Directions in India's Foreign Policy: Theory and Praxis*. Cambridge: Cambridge University Press, 2019.
4. Bajpai, Kanti P. and Harsh V. Pant, ed. *India's Foreign Policy: A Reader*. New Delhi: Oxford University Press, 2013.
5. Pant, Harsh V. *India's Foreign Policy: An Overview*. New Delhi: Orient Blackswan, 2018.
6. Pant, Harsh V. *Indian Foreign Policy: The Modi Era*. New Delhi: Har Anand Publication, 2019.
7. Chatterjee, Aneek. *Neighbours, Major Powers and Indian Foreign Policy*. New Delhi: Orient Blackswan, 2017.
8. Dixit, J.N. *Bhartiya Videsh Niti*. Delhi: Prabhat Prakashan, 2018.
9. Dixit, J.N. *Bharat Ki Videsh Niti aur Inke Padosi*. Delhi: Gyan Publishing, 2005.
10. Sikri, Rajiv. *Challenge and Strategy: Rethinking India's Foreign Policy*. New Delhi: Sage India, 2013.
11. Menon, Shivshankar. *Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy*. New Delhi: Penguin, 2018.
12. Pande, Aparna. *From Chanakya to Modi: Evolution of India's Foreign Policy,* New Delhi: Harper Collins, 2017.
13. Chaulia, Shreeram. *Modi Doctrine: The Foreign Policy of India's Prime Minister*.Delhi: Bloomsbury, 2016.
14. Ganguly, Anirban. *The Modi Doctrine: New Paradigms in India's Foreign Policy*. Delhi: Wisdom Tree Publishers, 2016.
15. Dubey, Muchkund. *India's Foreign Policy: Coping with the Changing World*. New Delhi: Orient Blackswan, 2017.